



Mohtaat Guftgu Kijiye (Hindi)

हफ्तावार रिसाला : 451
Weekly Booklet : 451

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ की किताब "गुफ्तगू के आदाब" से तीसरी क्रिस्त बनाम

मोहतात गुफ्तगू कीजिये

सफ़हात : 16



कुत्ते की शकल वाला

02

फ़ोहश बात की तारीफ़

02

नसीहतों भरी 50 दिलचस्प बातें

06

कसरत से दुरूद शरीफ़ पढ़ना काम आ गया

15

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ

أَلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى خَاتِمِ النَّبِيِّينَ ط
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ط بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

मोहतात गुफ्तगू कीजिये ?⁽¹⁾

दुआएं अन्तार : या अल्लाह पाक ! जो कोई 16 सफ़हात का रिसाला “मोहतात गुफ्तगू कीजिये !” पढ़ या सुन ले उसे हमेशा मोहतात गुफ्तगू और आमाल में एहतियातें करना नसीब फ़रमा और जन्नतुल फ़िरदौस में मां बाप समेत बे हिसाब दाखिला नसीब फ़रमा ।
أَمِينٍ بِجَاهِ خَاتِمِ النَّبِيِّينَ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो लोग किसी मजलिस में बैठते हैं फिर उस में न अल्लाह पाक का ज़िक्र करते हैं और न ही उस के नबी (صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) पर दुरूदे पाक पढ़ते हैं क्रियामत के दिन वोह मजलिस उन के लिये बाइसे हसरत होगी (अल्लाह पाक) चाहे तो उन को अज़ाब दे और चाहे तो बख़्श दे ।
(ترمذی، 5/247، حدیث: 3391)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

फ़ोहश गोई के बारे में 4 फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

फ़ोहश गो (यानी बे हयाई भरी बातें करने वाला) इन्सान बेबाक (यानी बे अदब व बे ख़ौफ़) होता है और उस की सब से बड़ी महरूमी येह है कि अल्लाह पाक और उस के प्यारे रसूल صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ऐसे शख़्स को पसन्द नहीं करते और फ़ोहश गो का ठिकाना जहन्नम है, इस सिल्लिसले में 4 फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ सुनिये और इब्रत हासिल कीजिये : ﴿1﴾ फ़ोहश गोई (यानी बे

① ... येह मज़मून अमीरे अहले सुन्नत बरक़ातुल्लेह العالیّه की किताब “गुफ्तगू के आदाब” सफ़हा 37 ता 51 से लिया गया है।

हयाई भरी बातें) बद अख्लाक्री की एक शाख है और बद अख्लाक्री जहन्नम में (ले जाने वाली) है। (2016: 406/3, त्रुडु, 4) बुरे कामों और बुरी (बे हयाई भरी) बातों का इस्लाम से कोई तअल्लुक नहीं। (20997: 431/7, हनबल, 7) (مسند احمد بن حنبل, 7/431, حديث: 20997) फ़ोहश गोई और बद ज़बानी को अल्लाह पाक पसन्द नहीं फ़रमाता। (3) फ़ोहश गोई अगर इन्सानी शक़ल में होती तो बुरे आदमी की सूत्र में होती। (الصمت لابن ابى الدنيا مع موسوعه, 206/7, حديث: 331)

गन्दी ज़बान ख़तरनाक बीमारी है

ताबेई बुजुर्ग हज़रते अह्नफ़ बिन कैस رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ ने एक मरतबा लोगों से फ़रमाया : मैं तुम्हें बदतरीन बीमारियां न बताऊं ? लोगों ने कहा : जरूर, आप ने फ़रमाया : बद अख्लाक्री और गन्दी ज़बान सब से ज़ियादा ख़तरनाक बीमारियां हैं।

(ادب الدنيا والدين, ص 383)

या रब्बल मुस्तफ़ा ! मुसलमानों के तीसरे ख़लीफ़ा हज़रते उस्माने ग़नी رَضِيَ اللهُ عَنْهُ की शर्मो हया का सदक़ा हमें फ़ोहश बातों और बे हयाई के कामों से बचा।

امین بجایہ خاتم النبیین صلی اللہ علیہ والہ وسلم

कुत्ते की शक़ल वाला

हज़रते इब्राहीम बिन मैसरा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं, कहा जाता है : “फ़ोहश कलामी (यानी बे हयाई की बातें) करने वाला क्रियामत के दिन कुत्ते की शक़ल में आएगा।” (الصمت لابن ابى الدنيا مع موسوعه, 205/7, قول نمبر: 329)

फ़ोहश बात की तारीफ़

कितने खुश नसीब हैं वोह इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें ! जो सिर्फ़ अच्छी गुफ्तगू के लिये ज़बान को हरकत में लाते और ख़ूब ख़ूब “नेकी की दावत” लोगों तक पहुंचाते हैं। अफ़सोस ! आज कल लोगों की कम बैठकें (यानी गैदरिंगज़

GATHERINGS) ऐसी होती होंगी जो फ़ोहश बातों से पाक हों हत्ता कि मज़हबी हुल्ये में नज़र आने वाले अफ़राद भी बसा औक्रात उस से बच नहीं पाते, शायद अ़वाम को येही नहीं पता होता कि फ़ोहश (यानी शर्मनाक) बात किसे कहते हैं ! तो सुनिये : फ़ोहश बात की तारीफ़ येह है : **الشَّعْبِيُّ عَنِ الْأُمُورِ السُّتْقَبَةِ بِالْعِبَارَاتِ الصَّرِيحَةِ** : यानी शर्मनाक बातों और कामों का खुले अल्फ़ाज़ में तज़िकरा करना । (151/3، احیاء العلوم) तो वोह नौजवान जो “मख्सूस ख्वाहिश” की तस्कीन की खातिर फ़ोहश यानी बे हयाई की बातें करने वाले बल्कि सिर्फ़ सुन कर दिल बहलाने वाले, गन्दी गालियां ज़बान पर लाने वाले, बेशर्मी वाले इशारे करने वाले, उन गन्दे इशारों से लुत्फ़ अन्दोज़ होने वाले और “गन्दी लज़्जतों” के हुसूल की खातिर फ़िल्में ड्रामे (कि इन में उ़मूमन बे हयाई की भरमार होती है) देखने वाले एक दिल हिला देने वाली रिवायत बार बार पढ़ें और ख़ौफ़े ख़ुदावन्दी से लरज़ें, चुनान्चे फ़रमाने मुस्ताफ़ा **صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** : “उस शख्स पर जन्नत ह़राम है जो फ़ोहश (यानी बे हयाई के क़ौल या फ़ेल) से काम लेता है ।” (84/3، صغیر، شرح جامع صغیر، 325) (الصمت، 7/204، حدیث: 325) ग़ैर औरतों या अम्रदों के बारे में आने वाले गन्दे वस्वसों पर तवज्जोह जमाने, जान बूझ कर शर्मनाक ख्यालात में ख़ुद को गुमाने और **مَعَادُ اللهِ !** “गन्दी हरकत” के तसव्वुर के ज़रीए लज़्जत उठाने वालों को बयान कर्दा रिवायत से इब्रत हासिल करनी चाहिये ।

आएं न मुझ को वस्वसे और गन्दे ख्यालात

अल्लाह ! निकल जाए हर इक दिल से बुरी बात

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ



“अच्छा बोलो” के आठ हुरूफ़ की निस्बत से 8 मदनी फूल

- ① मुस्कुरा कर और खन्दा पेशानी से बात चीत करना सुन्नत है।
- ② बात चीत करते हुए छोटों के साथ शफ़क़त भरा और बड़ों के साथ अदब वाला लहजा रखिये, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** दोनों के यहां आप इज़्जत पाएंगे।
- ③ चिल्ला चिल्ला कर बात चीत करना सुन्नत नहीं।
- ④ दौराने गुफ्तगू एक दूसरे के हाथ पर ताली देना ठीक नहीं है कि येह मुअज़्ज़ज़ व मोहज़्ज़ब (यानी अच्छे) लोगों के तरीके के खिलाफ़ है।

(सिरातुल जिनान, 7/502 ता 503)

- ⑤ बात चीत करते हुए दूसरे के सामने बार बार नाक सहलाते रहना, नाक या कान में उंगली डालना, थूकते रहना, बदन का मैल उतारना, पर्दे की जगहों को छूना या खुजाते रहना अच्छी बात नहीं, अकेले में भी बिला वजह येह काम नहीं करने चाहियें।
- ⑥ जब तक दूसरा बात कर रहा हो, इधर उधर देखे बग़ैर उस की तरफ़ पूरी तरह मुतवज्जेह हो कर इतमीनान से सुनना चाहिये, बीच में बोलना भी नहीं चाहिये कि किसी की बात काटना खिलाफ़े अदब है। अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आखिरी नबी, मक्की मदनी मुहम्मदे अरबी **صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** किसी की बात को न काटते अलबत्ता अगर कोई हद से तजावुज़ करने लगता तो उसे रोक देते या वहां से उठ जाते।

(शमल त्रुदी, स 200 لخصاً)

- ⑦ हक्ले यानी रुक रुक कर बात करने वाले या तुतले की पीछे से नक्ल न उतारें कि ग़ीबत है और उस के सामने से नक्ल उतारना उस की दिल आज़ारी का भी सबब है।
- ⑧ ज़ियादा बातें करने और दौराने गुफ्तगू क़हक़हे लगाते रहने से इज़्जत व रोब में कमी आती है।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ



“खामोशी भी नेमत है” के पन्दरह हुरूफ़ की निस्बत से दुनिया व आख़िरत में काम आने वाली 15 बातें

❶ हज़रते लुक्मान हकीम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ से पूछा गया : आप इस मक़ामो मर्तबे तक कैसे पहुंचे ? उन्होंने ने फ़रमाया : सच कहने, अमानत अदा करने और बेकार बातों को छोड़ देने से। (8925: قول نمبر: 358/6، حلیة الاولیاء، अल्लाह वालों की बातें, 6/462)

❷ फ़रमाने इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ : जो बात (किसी को उस की इस्लाह के लिये) सब लोगों के सामने की जाए उसे डांट डपट और बे इज़्जती करना शुमार किया जाता है और जो बात (किसी की इस्लाह के लिये) तन्हाई (यानी अकेले) में की जाए वोह शफ़क़त व नसीहत समझी जाती है। (इहयाउल इलूम (उर्दू), 2/659)

❸ चार चीज़ें चार चीज़ों की तरफ़ ले जाती हैं (1) “ख़ामोशी” सलामती की तरफ़ (2) “नेकी” बुज़ुर्गी की तरफ़ (3) “सख़ावत” सरदारी की तरफ़ और (4) “शुक्र” नेमत की ज़ियादती की तरफ़। (दीनो दुनिया की अनोखी बातें, 1/84)

❹ “आदमी का बात करना” उस की फ़ज़ीलत का बयान और अक़ल का तर्जुमान होता है लिहाज़ा उसे अच्छी और थोड़ी बात तक ही महदूद रखो। (यानी बोलने से बन्दे की समझदारी की पहचान होती है, लिहाज़ा कम बोले ताकि पर्दा रहे कि बातें करते चले जाने से उस के अन्दर छुपी हुई कम अक़ली और नादानी ज़ाहिर हो सकती है)

❺ आदमी अपनी बात चीत के ज़रीए पहचाना जाता और अपने काम के ज़रीए मशहूर होता है, लिहाज़ा दुरुस्त बात कहो (और सिर्फ़ अच्छे काम करो)।

❻ जो अपने आप को पहचान ले, अपनी ज़बान की हिफ़ाज़त करे, फ़ुज़ूल कामों में न पड़े और अपने मुसलमान भाई की बेइज़्जती न करे तो वोह हमेशा सलामत रहता और उसे शर्मिन्दगी कम उठानी पड़ती है।

«7» खामोशी इखितयार करो और सच्चे बन कर रहो क्युंकि खामोशी हिफ़ाज़त करने वाली और सच्चाई इज़्जत दिलाने वाली है।

«8» जो ज़ियादा बोलता है समझदार लोग उस से कतराते और दूर भागते हैं।

«9» जो अपनी गुफ्तगू में सच बोलता है उस की खुश अख़लाक़ी में इज़ाफ़ा होता है।

«10» ऐसी ख़ामोशी जिस से सलामती मिले उस गुफ्तगू से बेहतर है जिस से शर्मिन्दगी उठानी पड़े।

«11» जो ना मुनासिब गुफ्तगू करता है उसे ना पसन्दीदा बातें सुननी पड़ती हैं।

«12» ज़बान का ज़ख़म तल्वार के ज़ख़म से ज़ियादा सख़्त है।

«13» जाहिल की बेहूदा और तकलीफ़ देह बात पर ख़ामोश रहना उस के लिये भरपूर जवाब और उस जाहिल के लिये ख़ूब तकलीफ़ का बाइस है।

«14» ज़बान ऐसी काट करने वाली तल्वार है जिस के वार से बचना मुम्किन नहीं और कलाम (यानी बात) ऐसा निकला हुवा तीर है जिसे वापस लाना मुम्किन नहीं।

(दीनो दुनिया की अनोखी बातें, 1/85 ता 88 बतगय्युरे क़लील)

«15» किसी को अपना राज़ मत बताओ कि जो बात दो होंटों में नहीं समाती वोह कहीं भी नहीं समा सकती।

नसीहतों भरी 50 दिलचस्प बातें

(येह बातें सोशल मीडिया वग़ैरा से ले कर बित्तसरुफ़ यानी तब्दीली के साथ पेश की गई हैं)

«1» धागा और लम्बी ज़बान उमूमन उलझ जाते हैं इस लिये धागा लपेट कर और ज़बान समेट कर रखिये।

«2» शूगर (की बीमारी) मीठा खाने से होती है, मीठा बोलने से नहीं।



«3» जब चाकू, खन्जर, तीर और तलवार बैठे सोच रहे थे कि कौन ज़ियादा गहरा ज़ख्म देता है तब अल्फ़ाज़ पीछे बैठ कर मुस्करा रहे थे। (यानी अल्फ़ाज़ के ज़ख्म सब से गहरे होते हैं)

«4» जिन बातों पर झगड़ा कर के लोग मनो मिट्टी तले सो जाते हैं उन्ही बातों पे हल्की सी मिट्टी डाल कर दुनिया में पुरसुकून ज़िन्दगी गुज़ारी जा सकती है।

«5» छुरी ही से नहीं लफ़ज़ों से भी ज़बह किया जाता है, गोली ही सिर्फ़ हलाक नहीं करती, रवय्ये (यानी ग़लत बरताव) भी मार देते हैं, बेशक गोली और छुरी दुनिया से तअल्लुक खत्म करवा देती है लेकिन लफ़ज़ों की काट और रवय्यों की मार हल्क का फन्दा बन कर न जीने देती है न मरने।

«6» तब बोलिये जब आप के अल्फ़ाज़ आप की खामोशी से ज़ियादा मुफ़ीद व ख़ूबसूरत हों।

«7» तोता मिर्चे खा कर भी मीठा बोलता है जब कि इन्सान बसा औकात मीठा खा कर भी कड़वा बोलता है।

«8» मीठा बोलने वाले का “ज़हर” भी बिक जाता है जब कि कड़वा बोलने वाले का “शहद” भी नहीं बिकता।

«9» जिस तरह फल ख़रीदते वक़्त “मीठे फल” का इन्तिखाब करते हैं ऐसे ही बोलते वक़्त भी “मीठे बोल” मुन्तख़ब कीजिये।

«10» जिस तरह छोटे छोटे सूरुख बन्द कमरे में सूरज निकलने का पता दे देते हैं, इसी तरह छोटी छोटी बातें भी इन्सान का किरदार नुमायां करती हैं।

«11» बेशक अल्फ़ाज़ की भी अहमियत होती है मगर बाज़ अवकात लहजों का असर बहुत ज़ियादा होता है।

«12» हमेशा “मीठा” बोलो कि अगर कभी वापस लेना पड़े तो “कड़वा” न लगे।

- ❖13❖ कुछ सुवालात के जवाबात ज़बान नहीं वक्रत देता है और वक्रत जो जवाबात देता है वोह ला जवाब होते हैं।
- ❖14❖ कहते हैं : ज़रा सी बात से तअल्लुक़ टूट गया हालांकि उस “ज़रा सी बात” के पीछे बाज़ दफ़्आ “बहुत सी बातें” होती हैं और वोह ज़रा सी बात दर अस्ल बरदाशत की आखिरी हद होती है।
- ❖15❖ इन्सान अपनी ज़बान के पीछे छुपा हुवा है अगर उसे समझना है तो उसे बोलने दीजिये।
- ❖16❖ लफ़्ज़ों के दांत नहीं होते मगर येह काट लेते हैं और जब येह काटते हैं तो इन का ज़ख़्म आसानी से नहीं भरता।
- ❖17❖ बाज़ अवक्रात लोग नर्म लहजे से इतनी गर्म बात कर जाते हैं कि उन लफ़्ज़ों की तपिश (यानी गर्मी) ठन्डी होने (यानी भूलने) में उग्र लग जाती है।
- ❖18❖ अक्रल छोटी हो जाए तो ज़बान लम्बी हो जाती है।
- ❖19❖ “मशीन” को ज़ंग लग जाए तो पुर्जे (यानी PARTS) शोर करते हैं और जब “अक्रल” को ज़ंग लगे तो ज़बान फ़ुज़ूल बोलने लग जाती है।
- ❖20❖ सोच समझ कर बोलिये कि आप के अल्फ़ाज़ किसी का दिल बुरी तरह तोड़ भी सकते हैं।
- ❖21❖ उम्दा लहजे में बोले गए अल्फ़ाज़ से बात समझ में आती, और दिल में उतर जाती है क्यूंकि बाज़ अवक्रात जादू अल्फ़ाज़ में कम और लहजे में ज़ियादा होता है।
- ❖22❖ यूं तो बोलना सभी को आता है मगर किसी का दिमाग़ बोलता है तो किसी का अख़्लाक़।
- ❖23❖ “गुप्तगू” एक ऐसा अमल है जिस के ज़रीए या तो इन्सान किसी के “दिल में उतर” जाता है या फिर किसी के “दिल से उतर” जाता है।

﴿24﴾ दो मीठे बोल, पुर खुलूस अल्फ़ाज़ और मुअद्बाना (यानी बा अदब) लहजा किसी की रूह को तरो ताज़ा कर सकते हैं।

﴿25﴾ हकारत भरे ज़हरीले अल्फ़ाज़ बसा अवकात किसी को जीते जी मार डालने के लिये काफ़ी होते हैं।

﴿26-27﴾ सारी दुनिया का शहद जमा कर लीजिये मगर ज़बान का एक “मीठा बोल” उस (दुनिया भर के शहद) से ज़ियादा मीठा है और सारी दुनिया का ज़हर जमा कर लीजिये मगर ज़बान के एक “कड़वे बोल” का ज़हर उस (सारे ज़हर) से ज़ियादा कड़वा है।

﴿28﴾ अपनी ज़बान को कड़वी बातों से बचाना बहुत बड़ी कामयाबी है।

﴿29﴾ प्यार और “मीठे बोल” से सारी दुनिया फ़्तह की जा सकती है।

﴿30﴾ ज़बान का साइज़ अगर्चे कम है मगर बहुत कम लोग इसे सम्भाल पाते हैं।

﴿31﴾ सिर्फ़ अपनी ज़बान पर क़ाबू पा लेने से आप बहुत सारी मुश्किलात से बच सकते हैं।

﴿32﴾ अगर किसी की इस्लाह करनी हो तो नर्म लहजे में कीजिये, क्यूंकि नर्म लहजा इस्लाह के ज़ब्बे को जगाता है जब कि सख़्त लहजा ज़िद पैदा करता है।

﴿33﴾ कुछ बातों का जवाब सिर्फ़ ख़ामोशी है और ख़ामोशी बहुत ख़ूबसूरत जवाब है।

﴿34﴾ परिन्दे अपने पांव और इन्सान अपनी ज़बान की वजह से जाल में फंसते हैं।

﴿35﴾ गुप्ततगू में नर्मी इख़्तियार कीजिये अल्फ़ाज़ से ज़ियादा लहजे का असर होता है।

﴿36﴾ चम्मच नापाक हो जाए तो थोड़े से पानी से पाक की जा सकती है मगर ज़बान नापाक हो जाए तो उसे सात समुन्दर का पानी भी पाक नहीं कर सकता।

﴿37﴾ अगर कोई खाने में ज़हर घोल दे तो इस का इलाज मुम्किन, मगर कोई कान में ज़हर घोल दे तो उस का इलाज बहुत मुश्किल हो जाता है।

- ﴿38﴾ अपनी ज़बान को मुसलमानों को सलाम करने का आदी बना लीजिये इस से दोस्त बढ़ते और दुश्मन कम होते हैं।
- ﴿39﴾ बच्चे की ज़बान बसा औक्रात इन्सान की अच्छी या बुरी शख्सियत का राज उगल दिया करती है।
- ﴿40﴾ हमेशा छोटी छोटी बातों में भी एहतियात करनी चाहिये कि इन्सान पहाड़ों ही से नहीं पत्थरों से भी ठोकर खाता है।
- ﴿41﴾ बद गुमानी और बद ज़बानी दो ऐसे ऐब हैं जो इन्सान के हर कमाल (यानी खूबी) को ज़वाल (यानी नुक़सान) में बदल सकते हैं।
- ﴿42﴾ छोटी छोटी बातों का खयाल रखने से बड़ी बड़ी महबबतें पैदा होती हैं।
- ﴿43﴾ ज़बान की हिफ़ाज़त कीजिये ۞ ۞ ۞ इज़ज़त पाएंगे, बसूरते दीगर ज़िल्लत के इस्तिक्बाल के लिये तय्यार रहिये।
- ﴿44﴾ आवाज़ बुलन्द करने के बजाए अपनी दलील को बुलन्द कीजिये, फूल बारिश से खिलते हैं बादलों के गरजने से नहीं।
- ﴿45﴾ एक बार का झूट आप की हमेशा की सच्चाई पर सुवालिया निशान बना सकता है !
- ﴿46﴾ अक़्लमन्द इन्सान उस वक़्त तक नहीं बोलता जब तक सब खामोश नहीं हो जाते।
- ﴿47﴾ बुरी बातें सुन कर हौसला न हारो, शोर खिलाड़ी नहीं तमाशाई करते हैं।
- ﴿48﴾ किसी को चार पैसे दे कर खुश नहीं कर सकते तो “दो मीठे बोल” ही बोल कर खुश कर दीजिये।
- ﴿49﴾ लोगों के साथ हमेशा अच्छा सुलूक कीजिये ۞ ۞ ۞ उन के दिल में आप के लिये हमेशा इज़ज़त बनी रहेगी।

﴿50﴾ मेरा ऐब मेरी इस्लाह की निश्चय से मुझे ही बताइये, मेरी कोई दूसरी ब्रांच नहीं।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

“بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ” के उन्नीस हुरूफ़ की निस्बत से

ज़बान के मुतअल्लिक 19 अरबी मुहावरे (मअ उर्दू तर्जमा)

﴿1﴾ خَيْرُ الْكَلَامِ مَا قَلَّ وَدَلَّ (बेहतरीन बात वोह है जो क़लील यानी मुख्तसर व पुर दलील हो)

﴿2﴾ عَيْبُ الْكَلَامِ تَطْوِيلُهُ (कलाम यानी बात का (बिला ज़रूरत) लम्बा करना कलाम का ऐब है)

﴿3﴾ بَلَاءُ الْإِنْسَانِ مِنَ اللِّسَانِ (इन्सान पर आजमाइश ज़बान की वजह से आती है)

﴿4﴾ لِسَانُكَ دَاءٌ مَالَهُ دَوَاءٌ (तेरा ज़बान का ग़लत इस्तिमाल करना ऐसी बीमारी है जिस की कोई दवा नहीं)

﴿5﴾ لَا تَكْثُرْ كَلَامَكَ فَيَقِلَّ مَقَامُكَ (ज़ियादा गुफ्तगू न करो वरना तुम्हारा मक़ामो मर्तबा कम हो जाएगा)

﴿6﴾ حِفْظُ اللِّسَانِ سَلَامَةٌ الْإِنْسَانِ (ज़बान की हिफ़ाज़त में इन्सान की सलामती है)

﴿7﴾ يَمُوتُ الْفَتَى مِنْ عَثْرَةِ بِلْسَانِهِ وَكَيْسَ يَمُوتُ مِنْ عَثْرَةِ الرَّجُلِ (नौजवान अपनी ज़बान के फिसलने से मरता है, पांव के फिसलने से नहीं)

﴿8﴾ خَيْرُ الْخِلَالِ حِفْظُ اللِّسَانِ (ज़बान की हिफ़ाज़त बेहतरीन ख़स्लत व आदत है)

﴿9﴾ صَدْرُكَ أَوْسَعُ لِسَانِكَ (तेरा सीना तेरे अपने राज़ के लिये वसीअ तरीन जगह है लिहाज़ा अपनी कमज़ोरियां किसी को मत बता)

﴿10﴾ مَا أَصْغَرَ اللِّسَانَ وَمَا أَكْثَرَ نَفْعَهُ وَضَرَرَهُ (ज़बान कितनी छोटी सी है लेकिन इस का नफ़ा व नुक़सान कितना ज़ियादा होता है)

- «11» جُرْحُ اللِّسَانِ أَتَى مِنْ جُرْحِ السَّهَامِ (जबान का ज़ख्म तीर के ज़ख्म से ज़ियादा तक्लीफ़ देह है)
- «12» مَنْ حَفِظَ لِسَانَهُ نَجَا مِنَ الشَّرِّ كُلِّهِ (जिस ने अपनी ज़बान की हिफ़ाज़त की उस ने (बहुत) सारी बुराइयों से नजात पाई)
- «13» لَا تَتْرُكْ لِسَانَكَ يَفْطَحُ عُنُقَكَ (अपनी ज़बान को ऐसा खुला मत छोड़ो कि तुम्हारी गर्दन कटवा दे)
- «14» مَنْ كَثُرَ كَلَامُهُ قَلَّ فِعْلُهُ (जिस की बातें ज़ियादा हों उस का काम कम होता है)
- «15» مَنْ كَثُرَ كَلَامُهُ كَثُرَ مَلَامُهُ (जिस की गुफ्तगू ज़ियादा हो उसे शर्मिन्दगी का सामना भी ज़ियादा होता है)
- «16» مَنْ عَذَبَ لِسَانَهُ كَثُرَ إِخْوَانُهُ (जिस की ज़बान मीठी हो उस के दोस्त ज़ियादा होते हैं)
- «17» اللِّسَانُ مِفْتَاحُ الْخَيْرِ وَالشَّرِّ (भलाई और बुराई की चाबी ज़बान है)
- «18» الْحَرْبُ أَوْلَاهَا كَلَامٌ (लड़ाई की इब्तदा बातों से होती है)
- «19» لِيُنْ أَلْكَأَمْرِ قَيْدُ الْقُلُوبِ (नर्म बोल दिलों को लूट लेते हैं)
- صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

“या रब्ब ! करम फ़रमा” के ग्यारह हुरूफ़ की निस्बत से

11 उर्दू मुहावरे (मअ मअानी)

- (मुहावरा : यानी वोह अल्फ़ाज़ या जुम्ला जिसे अहले ज़बान ने लुग़वी माना की मुनासबत या ग़ैर मुनासबत से किसी ख़ास मफ़हूम के लिये मख़सूस कर लिया हो)
- «1» ज़बान बदलने से गली बदलना बेहतर है (यानी वादा वफ़ा न करने से नुक्सान उठाना बेहतर है)
- «2» ज़बान पर सर देना (यानी अहद पूरा करने के लिये जान की बाज़ी लगा देना)
- «3» ज़बान से फूल झड़ना (यानी निहायत मीठा बोलना)

- «4» ज़बान कैंची की तरह चलना (यानी बहुत तेजी से गुफ्तगू करना)
- «5» ज़बान को लगाम दो (यानी सोच समझ कर बोलो)
- «6» ज़बान हिलाने से काम निकलता है (यानी कहने सुनने ही से काम होता है, सिफ़ारिश से मक़सद हासिल होता है)
- «7» पहले तोलो बाद में बोलो (यानी पहले ग़ौर कर लो बात करने जैसी हो तो करो वरना चुप रहो)
- «8» एक चुप सौ सुख (यानी खामोशी में आराम ही आराम है)
- «9» एक चुप सौ को हराए (यानी चुप रहने वाला ही कामयाब होता है)
- «10» जो बात दो होंटों में नहीं समाती वोह कहीं भी नहीं समाती (यानी किसी को राज़ बता कर येह उम्मीद रखना बेकार है कि दूसरों को पता नहीं चलेगा)
- «11» ज़बान में खुजली होना (यानी तू तू मैं मैं करने को जी चाहना)

गुनाहों की आदतों से तौबा नसीब हो गई

ऐ आशिक़ाने रसूल ! बेशक बात चीत भी अमल है अगर रिज़ाए इलाही के मुताबिक़ हो तो सवाब, गुनाह भरी हो तो अज़ाब और फ़ुज़ूल हो तो बरोज़े आखिरत हिसाब । इन चीज़ों की मालूमात और अमल का ज़ब्बा बढ़ाने के लिये दावते इस्लामी के सुन्नतें सीखने सिखाने के क़ाफ़िलों में सफ़र करना मुफ़ीद है । एक “मदनी बहार” पेश की जाती है :

एक नौजवान दीनी माहौल में आने से पहले गुनाहों भरी ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे । झूट बोलना, मां बाप की ना फ़रमानी करना, बात बात पर गुस्सा करना, ना जाइज़ अंगूठी और छल्ले पहनना और छुंगली के नाखुन ख़ूब बढ़ा कर रखना वग़ैरा गोया उन की ज़िन्दगी का हिस्सा बन चुका था, लोगों के समझाने के बा वुजूद भी फ़ायदा न होता । बिल आखिर इस्लामी भाइयों की इन्फ़िरादी कोशिश की बरकत

से उन को दावते इस्लामी के सुन्नतें सीखने सिखाने के तीन दिन के क्राफ़िले में सफ़र की सज़ादत हासिल हुई, क्राफ़िले की बरकत यह ज़ाहिर हुई कि उन्होंने ने झूट बोलने की गन्दी आदत से तौबा की और ख़ूब बढ़ाया हुआ नाखुन जो मना करने के बा वुजूद भी नहीं काटते थे उसे दौराने क्राफ़िला ही काट दिया। मज़ीद यह कि उन्होंने ने अपनी बुरी आदतों से तौबा करते हुए अच्छी अच्छी निय्यतें कीं कि वालिदैन से मुआफ़ी मांग कर उन को राज़ी करूंगा, अपने गुस्से पर क़ाबू रखूंगा, दावते इस्लामी के दीनी कामों में खुद भी हिस्सा लूंगा और दूसरों को भी इस की दावत दूंगा।

ऐ आशिक़ान रसूल ! इस मदनी बहार में आप ने सुना कि वोह नौजवान इस्लामी भाई “ना जाइज़ अंगूठी और छल्ले पहना करते थे” इस हवाले से मक्तबतुल मदीना की किताब “रफ़ीकुल हरमैन” सफ़हा नम्बर 82 पर है : इस्लामी भाई जब कभी अंगूठी पहनें तो सिर्फ़ चांदी की साढ़े चार माशे (यानी 4 ग्राम 374 मिली ग्राम) से कम वज़न की एक ही अंगूठी पहनें एक से ज़ियादा न पहनें और इस एक अंगूठी में नगीना भी एक ही हो एक से ज़ियादा नगीने न हों और बग़ैर नगीने के भी न पहनें। नगीने के वज़न की कोई क़ैद नहीं। चांदी या किसी और धात का छल्ला (चाहे मदीने शरीफ़ ही का क्यूं न हो) या चांदी के बयान कर्दा वज़न वग़ैरा के इलावा किसी भी धात (मेटल-METAL मसलन सोना, तांबा, लोहा, पीतल, स्टील वग़ैरा) की अंगूठी नहीं पहन सकते। सोने चांदी या किसी भी धात की जंजीर गले में पहनना गुनाह है।

नीज़ बयान कर्दा मदनी बाहर में यह भी था कि वोह नौजवान “छुंगली यानी हाथ की सब से छोटी उंगली का नाखुन ख़ूब बढ़ा कर रखते थे” इस बारे में शरई मस्अला यह है कि “चालीस रोज़ से ज़ियादा नाखुन या मूए बग़ल या मूए ज़ेरे नाफ़ (यानी नाफ़ के नीचे के बाल) रखने की इजाज़त नहीं, बाद चालीस रोज़ के

गुनाहगार होंगे, एक आध बार में गुनाहे सगीरा (यानी छोटा गुनाह) होगा, आदत डालने से कबीरा (यानी बड़ा गुनाह) हो जाएगा, फ़िस्क़ होगा।”

(फ़तावा रजविय्या, 22/678)

सुन्नतें सीखने तीन दिन के लिये

हर महीने चलें क़ाफ़िले में चलें

(वसाइले बख़्शिशा, स. 670)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

या रबबल मुस्तफ़ा ! हमें गुफ्तगू करने के आदाब पर अमल करने की तौफ़ीक़ अत्रा फ़रमा और हमारी ज़बान से कभी भी तेरी नाराज़ी वाली बात न निकले।

امین بجاہ خاتم النبیین صلّی اللہ علیہ والہ وسلم

कसरत से दुरूद शरीफ़ पढ़ना काम आ गया

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र शिब्ली बग़दादी رَضِيَ اللهُ عَنْهُ फ़रमाते हैं : मैं ने अपने मर्हूम पड़ोसी को ख़्वाब में देख कर पूछा : مَا فَعَلَ اللهُ بِكَ? यानी अल्लाह पाक ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ? वोह बोला : मैं सख़्त हौलनाकियों से दो चार (यानी मुसीबत में मुब्तला) हुवा, मुन्कर नकीर के सुवालात के जवाबात भी मुझ से नहीं बन पड़ रहे थे, मैं ने दिल में ख़याल किया कि शायद मेरा ख़ातिमा ईमान पर नहीं हुवा ! इतने में आवाज़ आई : “दुनिया में ज़बान के ग़ैर ज़रूरी इस्तिमाल की वजह से तुझे येह सज़ा दी जा रही है।” अब अज़ाब के फ़रिश्ते मेरी तरफ़ बढ़े । इतने में एक ख़ूबसूरत उम्दा ख़ुशबू वाले साहिब मेरे और अज़ाब के दरमियान आड़ हो गए और उन्होंने ने मुझे, मुन्कर नकीर के सुवालात के जवाबात याद दिला दिये और मैं ने उसी तरह जवाबात दे दिये, الْحَمْدُ لِلَّهِ ! अज़ाब मुझ से दूर हुवा । मैं ने उन बुज़ुर्ग से अर्ज़ की : अल्लाह पाक आप पर रहम फ़रमाए आप कौन

हैं ? फ़रमाया : “तेरे कसरत के साथ दुरूद शरीफ़ पढ़ने की बरकत से मैं पैदा हुवा हूं और मुझे हर मुसीबत के वक़्त तेरी मदद पर मामूर किया गया है।”

(القول البدرج، ص 260)

आप का नामे नामी ऐ सल्ले अ़ला

हर जगह हर मुसीबत में काम आ गया

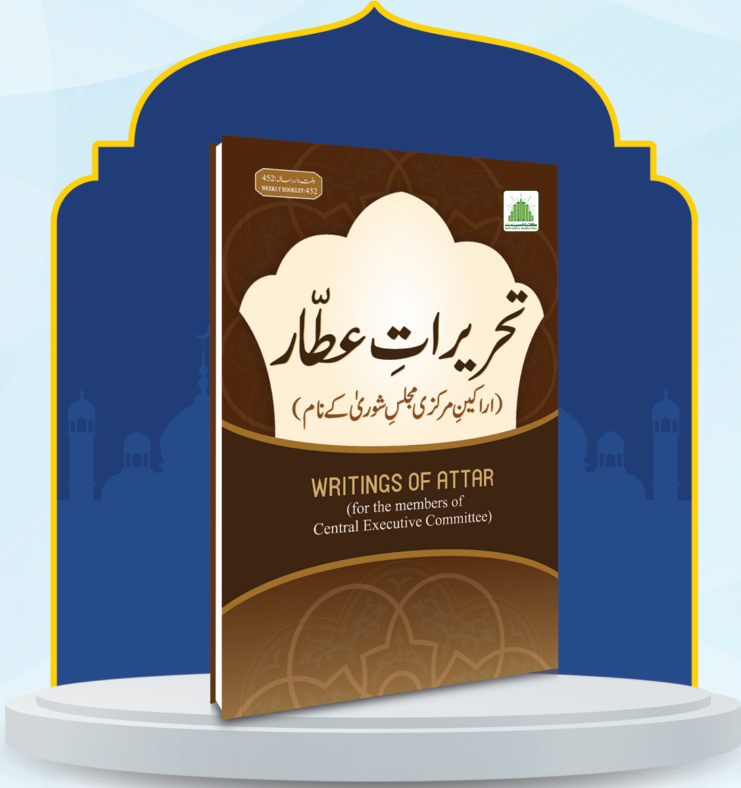
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! यहां आज कल बद क्रिस्मती से खामोश रहने वाले बहुत कम मिलते हैं। बाज़ों की ज़बान दिन भर चलती रहती है, सिर्फ़ सोते वक़्त ज़बान को कुछ आराम मिलता होगा और बाज़ तो नींद में भी बातें करने लग जाते हैं ! जो ज़ियादा बोलता है बसा अवक़ात उस के मुंह से झूट भी निकल सकता है, ग़ीबत भी हो सकती है, चुगल खोरी भी कर बैठता होगा, राज़ भी फ़ाश कर डालता होगा, दिल आज़ारियां भी करता रहता होगा, लोगों की हर बात को कैंची की तरह काटते रहने की वजह से अपना वक़ार भी खो बैठता होगा, बारहा ऐसा भी होता होगा कि बोल कर पछताता होगा, फिर बातूनी शाख़्स के “बक बक” करने से दूसरों को भी तो बोरियत होती है, लोग बेज़ार हो कर उस से पीछा छुड़ाने की कोशिश करते हैं। अल ग़रज़ ज़ियादा बातें करने में बे शुमार नुक़सानात हैं। इसी लिये तो किसी ने कहा है कि “न बोलने में नौ गुन” (यानी न बोलने में 9 खूबियां) क्यूंकि खामोश आदमी बहुत सारी आफ़तों से अमन में रहता है। अल्लाह पाक हम सब को बे ज़रूरत बातें करने से महफ़ूज़ फ़रमाए और ज़बान की आफ़तों से बचाए।

امین بِجَاهِ حَاتِمِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

اگلے ہفتے کا رسالہ



DAWAE ISLAMI
INDIA

FGN
Channel
Dekhte Rahiye



Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid,
Delhi-110006 ☎ +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi
Post Office, Mumbai-400003 ☎ +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha,
Mirzapur, Ahmedabad-380001 ☎ +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar
Road, Mominpura, Nagpur-440018 ☎ +91-9326310099

🌐 www.maktabatulmadina.in ✉ feedbackmmhind@gmail.com

📞 For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) ☎ +91-9978626025